A R DIGITECH
International Journal Of Engineering, Education And Technology (ARDIJEET)
www.ardigitech.in *ISSN 2320-883X,VOLUME 11 ISSUE 04 27/12/2023*

समकालीन कहानी में संवेदनाएं एवं भारतीय समाज : एक विवेचना

शिवदीप सिंह सेंगर, सनराइज विश्वविद्यालय अलवर, राजस्थान
डॉ. गोविन्द द्विवेदी, सह–प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, सनराइज विश्वविद्यालय अलवर, राजस्थान

प्रस्तावना – हिन्दी कहानी ने समय के साथ साथ चलते हुए आदि से लेकर आज तक राजनीति, सामाजिक आर्थिक आदि स्थितियों और जीवन के परिवेष में हुए बदलावों से सामना किया और मानव जीवन के चारो तरफ के वातावरण को देखा और इन सभी परिस्थियों को कहानीकारों ने महसूस किया, उसे अनुभव कर अपने चिंतन को रचनात्मक मोड़ दिया, जिसके परिणाम स्वरूप समकालीन कहानी का उदय हुआ। समकालीन कहानी में कहानीकारों ने अनेक तनावों और विचारों की टकराहट के बीच होते हुए अपनी पहचान बनाई। हिन्दी समकालीन कहानी के प्रवर्तक के रूप में गंगा प्रसाद विमल का नाम लिया जाता है। समकालीन कहानीकारों में उदय प्रकाश, अरूण प्रकाश, अखिलेश, अब्दुल बिस्मिलाह, असगर वजाहत, काशीनाथ सिंह, कृष्णा सोबती, गोविंद मिश्र, गिरिराज किशोर, चित्रा मुगदल, जवाहर सिंह, नासिरा शर्मा, प्रियवंद, पंकज बिष्ट, मालती जोशी, मृणाल पांडे, मेहरुन्निसा परवेज, अलका सरावगी, चंद्रकाता, राजेश जोशी, रमेश चंद्र शाह, रूपसिंह चंदेल, राजी सेठ, शैवाल, विजय, श्रवण कुमार, सुरेश कंटक, सुनील सिंह, सुरेश उनियाल, संजय सतीष जमाली आदि का नाम लिया जाता है।

समकालीन कहानी में भारतीय समाज के विविध रूप/आयाम –

1. **समकालीन कहानी मानवीय संवेदनाओं का भण्डार –** समकालीन कहानी मानवीय संवेदनाओं का भण्डार है। उसमें आज के समय के गहन विचारों, दबावों, कुटिलताओं, निराशा, आशाओं, भय–आशंकाओं, प्रेम– घृणा, आकांक्षाओं और संभावनाए है। समकालीन कहानी ने जीवन के यथार्थ के छोटे से लेकर बड़े बदलाव को उजागर किया है। देश और समाज से संबंधित अनेक गंभीर और बेबाक चिंताजनक सवालों को खड़ा किया। समकालीन कहानी ने मानवीय जीवन को यथार्थ के धरातल में अनेक विचारों को अनुभव को, भावनाओं को व्यक्त किया है।

2. **समाज से जुड़ी हुई कहानी –** समकालीन कहानी की विशेषता यही है कि वह समाज से जुडी हुई कहानी है अर्थात वह समाज से जुड़े हर वर्ग के व्यक्ति, उसके अस्तित्व और उसकी सोच की कहानी है। समकालीन कहानी ने कमजोर मजलूम आदमी को जीवन जीने के लिये ऐसा दृष्टिकोण दिया, जिससे वह असहाय जीवन के बदले एक सार्थक जीवन पा सके। अपनी सोच को सकारात्मक रूप दे सके।

3. **समकालीन कहानी यथार्थ की कहानी –** समकालीन कहानी देश, समाज व मानवीय जीवन की यथार्थ की कहानी है। इसने यथार्थ के परे यथार्थ को प्रकट किया है। सच को बिना किसी लाग लपेट के प्रस्तुत किया है। मानवीय संबंधो में गिरावट आना, रिश्तों में अलगाव, करूणा सहानुभूति के स्थान पर स्वार्थपरकता, नगरों महानगरों में बसने वाले आम आदमी से लेकर धनवान तक की मन मस्तिष्क की पीडाओं, निराशा आदि एवं देश व समाज में फैले भ्रष्टाचार कालाबाजारी, घूस प्रवृत्ति, बेईमानी को परत दर परत समकालीन कहानी ने खोला है।

4. **समकालीन कहानी दलित विमर्श –** समकालीन कहानियों में दलितों के जीवन से जुड़ी हुई हर अच्छी–बुरी, श्रेष्ठ– न्यूनतम स्थितियों को दिखाया गया है। भारतीय समाज में हर जाति और धर्म के दलितों की स्थिति एक जैसी ही रही है। इसे समकालीन कहानीकारों ने अपनी कहानियों में आत्मबोध और विशिष्ट सामाजिकता के साथ बखूबी प्रस्तुत किया है कि किस तरह समाज आज भी परंपरागत जातिगत भेद–भाव, छुआ–छूत, ऊंच– नीच की लकीर पार ही नहीं कर पाया है।

5. **समकालीन कहानी : आम आदमी की कहानी –** आम आदमी आम–आदमी समकालीन कहानी का प्रमुख पात्र या केन्द्र बिन्दु रहा है। इसी आम आदमी के चारों ओर के वातावरण को समकालीन कहानी दिखाती है। यह आम आदमी

वो है, जो सर्वाधिक त्रस्त है, दुखी, इसे जीवन में ज्यादा संघर्ष को झेलना पड़ता है, कितना टूट जाता है इन संघर्षो से और कभी कभी तो जीवन यापन की दैनिक जरूरतों के लिए अनैतिक राह में चलना भी स्वीकार लेता है।

6. **समकालीन कहानी में विरोध की गूंज –** समकालीन हिन्दी कहानी में विरोध करने की प्रवत्ति रही है। समकालीन कहानी का यह विरोध व्यक्तिगत स्तर पर और सामूहिक स्तर का भी रहा है। समकालीन कहानी न व्यक्ति के प्रति भी विरोध प्रकट किया और समूह के प्रति भी। समकालीन कहानीकारों ने अपनी माध्यम से राजनीति, सामाजिक, शिक्षा, न्याय–व्यवस्था आदि में जो भी बुराईयां और कुरितियां कमियां नजर आयी उसके प्रति विरोध प्रकट किया।

7. **समकालीन कहानी स्त्री विमर्श –** समकालीन कहानी में नारी व्यक्तित्व को खुलकर प्रस्तुत किया है। उच्च वर्गीय, मध्यवर्गीय, निम्नवर्गीय नारी स्थिति को सिर्फ अबला ही नहीं सबल रूप में दिखाया। इस कहानी ने स्त्री के दूसरे पक्ष / रूप को भी दिखाया, जो पर पुरुष प्रेम को बुरा नहीं मानती, अपने भविष्य के लिए मातृत्व सुख को भी नजर अंदाज करती है। विवाह पूर्व या विवाह उपरांत पर पुरुष से यौन संबंध बनाने में संकोच नहीं करती। समकालीन कहानी में हर वर्ग स्त्री के संघर्षो पीड़ाओं, सकारात्मक, नकारात्मक दोनों रूपों को स्पष्ट चित्रित किया है।

उपरोक्त कारणों से ही समकालीन कहानी की खास पहचान बनी है। यही वजह रही है कि कहानी को फिर कहानी की तरह लिया जा रहा है कोई वाढ या नारा नहीं दिया गया। आठवें दशक की कहानी की पहचान समकालीन कहानी के नाम से पहचानी जा रही है। इन कहानीकारों में मालती जोशी की पिया पीर न जानी, पंख तोलती चिड़िया, कहानियां सामाजिक, पारिवारिक वातावरण एवं स्त्री जीवन के संघर्षो को व्यक्त करती है। असगर वजाहत की कहानी किरच किरच लड़की, बेरोजगारी के चलते युवाओ में किसी भी प्रकार की नौकरी करके जीवन यापन करने को मजबूर जिससे वह संवेदनहीन हो लड़की एक डमी (लकडी का बूत) में परिवर्तित होने को दिखाया है। नासिरा शर्मा की कहानी अपनी कोख, चित्रा मुगदल की प्रेतयोनि कहानी, मृदुला गर्ग की कहानी अब तक विमलाएं, स्त्री के सशक्त रूप को दिखाती है।

निष्कर्ष – समकालीन कहानी ने अनेक सोपनों को पार कर अपना एक नया आयाम बनाया है, और इन्हीं आयामों में चित्रित किया है। यह कहानियां मानवीय संवेदनाओं का विपुल भण्डार है। समाज से जुडी हुई कहानियां है, क्योंकि इसमें समाज के निचले स्तर से लेकर उच्च स्तरीय लोगों के जीवन का रूप दिखाई देता है। मानवीय जीवन के मन–मस्तिष्क में चलने वाले भावों एवं संवेदनाओं के बढ़ते घटते क्रम को स्वार्थ निस्वार्थ के कारण बनते–बिगड़ते रिश्तों के जाल को आम आदमी के संघर्षो को, जात–पात के खेल एवं दलित–जीवन के उतार–चढ़ाव को समाज में नारी अधिकारों व उन्नति के खिलाफ होते विरोधी स्वरों को तो कभी इन्हीं अधिकारों के लिए नारी की बुलंद होती आवाज आदि को कहानियों में दिखाया गया है। यह कहानियाँ विभिन्न वर्गों का प्रतिनिधित्व करती है, विभिन्न धर्म, जाति, प्रांत– भाषा एवं सम्पूर्ण भारतीय समाज की तस्वीर दिखाती है। यह भारतीय समाज की व्यवस्था और मानवीय जीवन की गुणवत्ता को बेबाक ढंग से प्रस्तुत करती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. हिन्दी कहानी परंपरा और प्रगति – डॉ. हरदयाल
2. बीसवीं सदी के अंत में हिन्दी कहानी डॉ. नीरज खरे
3. कहानीः स्वरुप और संवेदना राजेन्द्र यादव